मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 3

nbt.india
एकः सूते सकलम्

मार्च 2014

2015 (14 से 22 फरवरी) में फिर मिलेंगे

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 का समापन

14 से 22 फरवरी, 2015 की अवधि में, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के 23वें संस्करण में, नई दिल्ली के प्रगति मैदान में फिर से पुस्तकों का महाकुंभ लगेगा इस घोषणा के साथ ही नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 का गरिमापूर्ण ढंग से समापन हो गया। वर्ष 2015 में दक्षिण कोरिया पुस्तक मेला में सम्मानित अतिथि देश होगा यह घोषणा भी की गई। पुस्तक मेले के अंतिम दिन, प्रगति मैदान के हॉल नं. 8 के सभागार में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 'पुस्तकें एवं आज के युवा' विषय पर आयोजित परिचर्चा के अवसर पर न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने 2015 के विश्व पुस्तक मेला के आयोजन की तिथि की घोषणा की।

इस अवसर पर सांसद एवं भारत सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, "पुस्तकें सभ्यता का विकास करती हैं। बिना पुस्तकों के किसी भी सभ्यता को विकसित करना संभव नहीं है। कोई भी तकनीक पुस्तकों के सौंदर्य का स्थान नहीं ले सकती।" डॉ. सिंह ने युवाओं को अधिक-से-अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित किया। आइटीपीओ की अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक सुश्री रीटा मेनन ने कहा कि हमें खुशी है कि मेले में बहुत अधिक संख्या में पुस्तकप्रेमी आए। विशिष्ट अतिथि देश, पोलैंड के राजदूत श्री पियॉत्र ने कहा कि इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में अतिथि देश का सम्मान पाकर हमें अत्यंत गर्व का अनुभव हुआ।

इस परिचर्चा मंच पर डॉ. कर्ण सिंह के निबंधों, कविताओं एवं उपन्यासों के संकलन, 'त्रिवेणी' का भी लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर न्यास-निदेशक डॉ. एम. ए. सिकंदर भी उपस्थित थे।

इस वर्ष पुस्तक मेले में, गत वर्ष की तुलना में दुगुने, यानी लगभग 10 लाख पुस्तकप्रेमी आए।

उद्घाटन : सब कुछ ज्ञान के लिए

मैं मानता हूँ कि पुस्तक एवं अन्य मुद्रित सामग्री की पठन-आदत मानव सभ्यता में सहज-स्वाभाविक रही है और इसलिए इनका अस्तित्व बना रहेगा।

–प्रणव मुखर्जी, भारत के राष्ट्रपति

"इंटरनेट व अन्य सूचना-प्रौद्योगिकीय विकास भले ही अस्थायी तौर पर पुस्तक पठन-अभिरुचि को प्रभावित कर रहा हो, लेकिन कोई भी तकनीकी विकास मुद्रित पुस्तकों का विकल्प नहीं बन सकती। यह जान लेना चाहिए कि मुद्रित पुस्तकें व डिजिटल माध्यम एक-दूसरे के पूरक हैं, न कि प्रतिद्वंद्वी।" नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (न.दि.वि.पु.मे.) 2014 का उद्घाटन करते हुए भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने ये उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने भारत

के लोगों में 'ज्ञान की जबरदस्त भूख' होने की बात कही और कहा कि हमारा मोट्टो (आदर्श-वाक्य) होना चाहिए– सब कुछ ज्ञान के लिए और सब के लिए ज्ञान। राष्ट्रपति महोदय ने नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के संबंध में कहा कि "यह सराहनीय ढंग से दोहरी भूमिका निभा रहा है– सांस्कृतिक के साथ-साथ व्यापारिक भी।" अपने उद्बोधन में राष्ट्रपति महोदय ने पुस्तक के बारे में अनेक बातें कहीं। उन्होंने सूत्र रूप में कहा, "कोई भी मानव समाज अपने सभी क्षेत्रों में पुस्तकों के बिना विकास नहीं कर सकता।

नवीनतम प्रकाशन

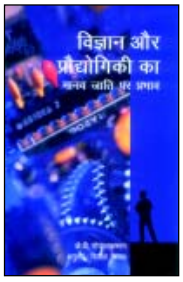

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मानव जाति पर प्रभाव

के.वी. गोपालकृष्णन; अनु. : विनीता सिंघल

पृ. 150 ₹ 130

ISBN 978-81-237-7073-4

पुस्तकें अपने साथ पीढ़ियों का ज्ञान लिये चलती हैं। ...पुस्तक मेले अनेकशः प्रेरणाओं के स्रोत हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि इतिहास और परंपरा एक तर्कपूर्ण भारत का महोत्सव मनाते हैं, न कि असहनशील भारत का।''

15 फरवरी को नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान के हंसध्वनि थिएटर में आयोजित उद्घाटन समारोह में राष्ट्रपति के संबोधन को लेखकों, पुस्तकप्रेमियों, बच्चों एवं विदेशी मेहमानों ने मनोयोग से सुना।

इस अवसर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री सुश्री चंदेश कुमारी कटोच ने भी पुस्तकप्रेमी जनसमूह को संबोधित किया। उन्होंने कहा, ''भारत एक युवा देश है। भारत में प्रत्येक तीसरा व्यक्ति युवा है। इसलिए उन्हें सही शिक्षा देना अत्यावश्यक है। इस बदल रहे विश्व के साथ आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए केवल सही पुस्तकें ही उनकी सहायता कर सकती हैं।'' मंत्री महोदया ने पुस्तकों को हमारे समाज का 'अखंड हिस्सा' बताते हुए पुस्तक मेले की सफलता की कामना की।

पुस्तक मेले में पोलैंड के 'सम्मानित अतिथि देश' होने की वजह से पोलैंड गणराज्य की ओर से वहाँ की सार्वजनिक एवं आर्थिक कूटनीतिक मामलों, विदेश मंत्रालय की सचिव सुश्री कैटरजिना कैसेपरसी व संस्कृति एवं विरासत विभाग की सचिव मलगोर्जाटा ओमीलेनोव्स्की ने भी इस अवसर पर अपने संबोधन किए। सुश्री कैटरजिना ने इस पुस्तक मेले में पोलैंड को अतिथि देश सम्मान मिलने को दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ करने का माध्यम निरूपित किया। सुश्री मलगोर्जाट ने भारत के लोगों से पोलैंड के पुस्तक मेलों में आने का आह्वान किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में रा.पु. न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने राष्ट्रपति जी को 'महान पुस्तकप्रेमी' बताते हुए कहा कि 1964 में एस. राधाकृष्णन के बाद यह पहला अवसर है जब राष्ट्रपति द्वारा पुस्तक मेले का उद्घाटन हुआ है। पुस्तक मेले के सह-आयोजक आइटीपीओ की प्रमुख सुश्री रीटा मेनन ने कहा कि विश्व में अब जहाँ भी आइटीपीओ प्रदर्शनियाँ करेगा, वहाँ पुस्तकों और प्रकाशकों को भी स्थान दिया जाएगा।

प्रख्यात लेखक रस्किन बॉन्ड ने कहा कि कुछ लोग पठन-रुचि कम होने की बात करते हैं, लेकिन इतने बड़े पैमाने पर पुस्तकें प्रकाशित होने पर यह धारणा सही नहीं लगती। किताबें छपती हैं तो बिकती भी हैं।

इस अवसर पर उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, के सचिव श्री अशोक ठाकुर भी उपस्थित थे।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने कहा कि ''राष्ट्रपति महोदय ने हमारे साथ जो ज्ञान की बातें साझा की हैं वह पुस्तक एवं पठन के क्षेत्र में प्रोन्नयन के हमारे प्रयासों को बढ़ाने में दूर तक साथ देंगी।''

विदेशी मंडप

इस बार विश्व पुस्तक मेले में 25 देशों के प्रकाशकों ने भागीदारी की। हॉल सं. 7 में विदेशी मंडप स्थापित किया गया था। पोलैंड को विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान प्रदान किया गया था। (विशेष विवरण कॉलम 2 पर प्रस्तुत है।)

हर बार की तरह पाकिस्तान से सबसे ज्यादा भागीदार यहाँ आए। यहाँ के पाँच प्रकाशकों द्वारा उर्दू, अँग्रेजी सहित हिंदी में भी पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं। किंतु उर्दू साहित्य और इस्लाम पर केंद्रित पुस्तकों का बोलबाला था। इंडोनेशिया नई दिल्ली के इस विश्व पुस्तक मेला में पहली बार आया। इंडोनेशिया की मिश्रित झाँकी को प्रस्तुत करती सौ से अधिक पुस्तकें यहाँ थीं। विदित हो कि इंडोनेशिया भी भारत की तरह एक बहुभाषी देश है, जहाँ छह सौ से ज्यादा भाषाएँ हैं, प्रमुख भाषा 'बहाई' है। दक्षिण कोरिया के दो स्टॉल लगे थे। एक में कोरियाई प्रकाशन जगत, विशेषकर बाल पुस्तकों की झलक थी, दूसरे में एक धर्मप्रचारक के बहुभाषायी प्रकाशन रखे थे। पहले स्टॉल पर कोरियाई एवं अँग्रेजी भाषा में पुस्तकें रखी थीं। यहाँ बुद्ध पर भी बेहद सुंदर पुस्तकें थीं। दूसरे में हिंदी, पंजाबी, ओड़िया आदि भारतीय भाषाओं में भी पुस्तकें उपलब्ध थीं।

नेपाल कई वर्षों से पुस्तक मेले में भागीदारी कर रहा है। यहाँ 13 नेपाली प्रकाशकों की लगभग 500 पुस्तकें प्रदर्शित थीं। पुस्तकें नेपाली व अँग्रेजी में थीं। नेपाली में चारों वेद, प्रेमचंद तथा मिथिलांचल की लोक संस्कृति पर पुस्तकों को देखना सुखद लगा। शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला के निदेशक अहमद अल अमेरी ने अपने देश का यहाँ प्रतिनिधित्व किया। शारजाह के स्टॉल पर अरबी में अनूदित पुस्तकें थीं। सिंगापुर ने पहली बार नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भागीदारी की। नेशनल बुक डेवपलमेंट काउंसिल ऑफ सिंगापुर के निदेशक आर. रामचंद्रन ने अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। वहाँ से लेखक, चित्रकार, प्रकाशक व प्रशासकों का 15 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल आया था। विदेशी मंडप में ईरान, फ्रांस, जापान तथा श्रीलंका के भी स्टॉल लगे थे।

दो अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, नामतः–अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्टॉल भी लगे थे। श्रम संगठन श्रमिक विषय पर संयुक्त राष्ट्र की सबसे बड़ी इकाई है। इस स्टॉल पर श्रम के विभिन्न पहलुओं पर पुस्तकें, मैनुअल, रिपोर्ट, सर्वेक्षण एवं आँकड़े आदि उपलब्ध थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी संयुक्त राष्ट्र की एक अनुषंगी संस्था है। इस स्टॉल पर भी स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें, जर्नल, मैनुअल, रिपोर्ट आदि प्रदर्शित थे।

पोलैंड : विशिष्ट अतिथि देश

इस बार के विश्व पुस्तक मेले में पोलैंड को विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान प्रदान किया गया। इस नाते पोलैंड से एक बड़े प्रतिनिधिमंडल का पुस्तक मेला में आगमन हुआ। प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में विदेशी प्रतिभागियों के बीच पोलैंड का एक विशिष्ट और बड़ा-सा स्टॉल लगा था। इस स्टॉल पर पोलिश भाषा के अलावा अँग्रेजी तथा हिंदी में भी पुस्तकें उपलब्ध थीं। पुस्तक मेला के उद्घाटन के बाद पोलैंड मंडप का भी उद्घाटन हुआ। उद्घाटन पोलैंड के संस्कृति व विरासत विभाग की सचिव मलगोर्जाट ओमीलेनोव्स्की ने किया। इस अवसर पर उच्च शिक्षा सचिव अशोक ठाकुर, न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन एवं न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर का सान्निध्य रहा।

पोलैंड की प्रस्तुतियों में शामिल थे–पोलैंड के सुपरिचित एवं समकालीन लेखन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विमर्श एवं पठन आदि। पोलिश प्रस्तुतीकरण बच्चों एवं युवाओं के लिए विभिन्न रोचक कार्यक्रमों का एक समृद्ध मिश्रण भी रहा।

22 फरवरी को पोलिश मंडप में पोलैंड से आए लोखकों, कलाकारों तथा पुस्तक संस्थान के अधिकारियों के साथ कुछ भारतीय लेखकों, कलाकारों तथा संपादकों की एक अनौपचारिक बैठक में न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन ने इस पुस्तक मेले में पोलैंड की भागीदारी पर खुशी व्यक्त की। उन्होंने कहा, ''यह मंच दोनों देशों के बीच साहित्यिक और प्रकाशन के रिश्तों को मजबूत करेगा।'' इस अवसर पर वक्ता थे–पोलिश इंस्टीट्यूट की निदेशक

अन्ना ट्रिस्बोमली, पोलिश कवि जेसेक डेहलन, कलाकार मलगोर्जाटा गुरोव्स्का। भारत के पक्ष से अनेक भाषाओं के लेखक तथा न्यास के कुछ संपादक शामिल हुए। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने कहा कि पोलैंड आगे भी इसी तरह अपनी भूमिका निभाता रहेगा और सहयोग देता रहेगा। पोलिश प्रतिभागियों ने अपनी भारत यात्रा को 'बेहद रोमांचक और सफल' बताया।

'सत्याग्रह : पोलिश काव्य की एक खोज' शीर्षक काव्य सत्र की अध्यक्षता कवि अशोक वाजपेयी ने की। इस अवसर पर कुछ महत्वपूर्ण पोलिश कवियों ने रचनाओं का पाठ भी किया। रा.पु. न्यास द्वारा प्रकाशित मीहाऊ रूशिनेक की पुस्तक के हिंदी अनुवाद 'नन्हा शोपेन' (अनु. : मंगलेश डबराल) तथा रिषाई कापुश्चिंस्की की पुस्तक के हिंदी अनुवाद 'शाहों का शाह' (राजकमल प्रकाशन) के लोकार्पण भी हुए। अन्य लोकार्पित पुस्तकें थीं–'कमरे तथा अन्य कहानियाँ' (ओल्गा तुकार्चुक; हिंदी अनु. : मारिया पुरी) तथा 'गालिसिया की कथाएँ' (अंजेय स्थाशुक; हिंदी अनु. : मोनिका बोवार्चिक)।

विदित हो कि पोलैंड के स्टॉल को बेहद खूबसूरती से डिजाइन किया और सजाया गया था। इस स्टॉल की दीवारों पर रिषार्ड कापुश्चिंस्की (1932-2007) की रचनाओं, चित्रों को प्रस्तुत किया गया था। रिषार्ड एक साथ कवि, पत्रकार, कहानीकार और सबसे बढ़कर घुमक्कड़ थे। पोलैंड मंडप की एक अन्य विशेषता थी यहाँ प्रदर्शित बाल पुस्तकें। 'एक अनोखी दुनिया : पोलैंड से 20 चित्रकार' शीर्षक से एक प्रदर्शनी भी लगी थी। इस मंडप पर अमूमन प्रतिदिन पोलैंड के लेखक, चित्रकार, अनुवादक आदि पाठकों से बातचीत करते और अपने अनुभव साझा करते। पोलैंड के युवा लेखक जेसेक डेहलन से संवाद में बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी शामिल हुए। उन्होंने कहा, ''अपनी दादी से जो कहानियाँ मैंने सुनीं, असल में मेरे लिखने का प्रेरणा स्रोत वही रहा है।'' पोलैंड मंडप का संयोजन-समन्वय न्यास में अँग्रेजी भाषा संपादक कुमार विक्रम ने किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का ई-बुक्स के क्षेत्र में प्रवेश

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, डॉ. एम.एम. पल्लम राजू द्वारा स्वामी विवेकानंद पर दो ई-पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का यह 22वाँ संस्करण इस मायने में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के लिए मील का पत्थर साबित हुआ कि न्यास ने इस पुस्तक मेले में ई-बुक्स के क्षेत्र में अपना पहला कदम रखा। एनबीटी द्वारा स्वामी विवेकानंद की 150वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में, उन पर अँग्रेजी भाषा में प्रकाशित दो पुस्तकों–'स्वामी विवेकानंद–द इटरनल इंस्पिरेशन फॉर द यूथ' (लेखक : संदीपन सेन) तथा 'ए सिंपल लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानंद' (लेखक : ब्रह्मचारी अमल)–के मानव संसाधन विकास मंत्री, डॉ. एम.एम. पल्लम राजू द्वारा मुद्रित रूप के साथ-साथ ई-प्रारूप में भी लोकार्पण के साथ ही न्यास ने ई-बुक्स के क्षेत्र में कदम धर दिया। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा, ''स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों एवं मूल्यों की वर्तमान समाज को बहुत आवश्यकता है। स्वामी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आज हमारे समाज, विशेषकर युवा पीढ़ी, में मानवता और सामाजिक मूल्यों को सही तरीके से परिभाषित करने की आवश्यकता है।''

उन्होंने आगे कहा कि हाल ही में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिनसे समाज और देश शर्मसार हुआ है। ऐसे में स्वामी विवेकानंद जी के विचार, उनके मूल्य एक बेहतर एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने में सहायक होंगे।

स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती समारोह समिति के अध्यक्ष एन.के. भट्टाचार्जी ने बताया कि स्वामी विवेकानंद के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए रा.पु. न्यास के साथ वे 13 विभिन्न योजनाओं पर काम कर रहे हैं। लेखक संदीपन सेन ने कहा कि स्वामी जी के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को एक पुस्तक में उकेर पाना संभव नहीं था। दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर, प्रो. सुनीता सेनगुप्ता ने भी अपनी बात रखी।

विदित हो कि एनबीटी की लगभग एक हजार पुस्तकों के डिजिटलीकरण का काम न्यास के टेक्नोलॉजी पार्टनर, नाइनस्टार्स द्वारा किया जा रहा है। ई-बुक्स के क्षेत्र में यह राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का पहला कदम है। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने कॉपीराइट ऑफिस के 'लोगो' का अनावरण किया तथा विभागीय वेबपोर्टल www.copyright.gov.in का भी शुभारंभ किया। इस वेबसाइट के माध्यम से अब कॉपीराइट का काम ऑनलाइन भी किया जा सकेगा। डॉ. पल्लम राजू ने इस अवसर पर कहा, ''सरकार पारदर्शी, जिम्मेदार और भ्रष्टाचार के खिलाफ शून्य सहनशीलता वाला प्रशासन देने के लिए कटिबद्ध है।''

इस अवसर पर मा.सं.वि.मं. के सचिव अशोक ठाकुर ने रा.पु. न्यास के ई-पुस्तक संबंधी प्रयासों की प्रशंसा की। न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन ने कहा कि इन पुस्तकों के माध्यम से रा.पु. न्यास ई-दुनिया में प्रवेश कर रहा है और अब इसकी पहुँच कई गुना ज्यादा लोगों में होंगी। कार्यक्रम में पुस्तक प्रोन्नयन एवं कॉपीराइट की संयुक्त निदेशक वीना ईश, निदेशक जी.आर. राघवेंद्र, न्यास के वर्तमान निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर तथा पूर्व निदेशक निर्मल कांति भट्टाचार्जी समेत लोकार्पित पुस्तकों के एक लेखक संदीपन सेन भी उपस्थित थे।

भारतीय सिनेमा के मशहूर कलाकार स्व. फारूक शेख अपने जीवनकाल में पुस्तकों के माध्यम से रा.पु. न्यास से जुड़े रहे। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि इस वर्ष मेले में शिरकत करने के लिए वे हमारे बीच नहीं रहे। रा.पु. न्यास द्वारा 17 फरवरी को न.दि.वि.पु. मेले में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें फिल्म निर्देशक रमन कुमार, अभिनेत्री दीप्ति नवल, न्यास-निदेशक डॉ. सिकंदर भागीदार रहे। संचालन टीवी एंकर रवीश कुमार ने किया।

कथासागर : भारतीय बाल साहित्य का महोत्सव

बच्चे हमारे देश के भावी नागरिक हैं। ..प्रगति मैदान में लगा यह पुस्तक मेला इसलिए विशिष्ट है क्योंकि यह बाल साहित्य पर केंद्रित है। **–चंद्रेश कुमारी कटोच,** संस्कृति मंत्री

पिछले कई पुस्तक मेलों का एक विशिष्ट आकर्षण, बाल मंडप इस बार भी आगंतुकों, पुस्तकप्रेमियों के लिए अनूठा रहा। इस बार इस मंडप की विशिष्टता इसलिए भी थी क्योंकि विश्व पुस्तक मेले के इस 22वें संस्करण का थीम 'बाल साहित्य' पर केंद्रित था। 'कथासागर : बाल साहित्य का महोत्सव' नाम से इस विशेष थीम पैवेलियन का 15 फरवरी को उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव श्री अशोक ठाकुर द्वारा उद्घाटन किया गया। प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में विशेष रूप से निर्मित मंडप में उन्होंने रा.पु. न्यास द्वारा प्रकाशित 'कहानी... कहानियों की' तथा 'चिल्ड्रंस बुक 2014' नामक दो सूचीपत्रों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर न्यास-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन, मा.सं.वि.मं. में संयुक्त निदेशक वीणा ईश, न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर श्री उपस्थित थे। प्रख्यात बाल लेखक रस्किन बॉन्ड काफी देर बाल मंडप में रहे।

बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे एवं बाल चित्रकार पुलक विश्वास की स्मृतियों में गोष्ठी हुई एवं प्रतिदिन फिल्मों के प्रदर्शन भी। हरिकृष्ण देवसरे तथा पुलक विश्वास के साथ लेखक, चित्रकार एवं डॉल्स म्यूजियम के संस्थापक शंकर पिल्लई के जीवन एवं कर्म पर आधारित तीन कोनों की स्थापना मंडप के विशेष आकर्षण थे। इन दिवंगत विभूतियों के छायाचित्रों से सुसज्जित इन कोनों को देखने प्रतिदिन बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी पहुँचे। इसके साथ ही, हॉल के दो दिशाओं की दीवारों पर 'कहानी.. कहानियों की' नाम से भारत के समृद्ध बाल साहित्य की चाक्षुष यात्रा ने बाल साहित्यप्रेमियों को काफी आकर्षित किया। इस यात्रा में कुछ चुनिंदा पुस्तकों को मुद्रित रूप में, बड़े आकार में प्रदर्शित किया गया था। हिंदी एवं अँग्रेजी समेत अनेक भारतीय भाषाओं की लगभग 800 बाल पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। 'सेव द चिल्ड्रन' द्वारा भी एक विशिष्ट प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसमें कुछ वंचित बच्चों द्वारा निर्मित कामों को दर्शाया गया था।

चित्रकार कोना में भारत के प्रख्यात चित्रकारों–मिक्की पटेल, अतनु रॉय, जयंती मनोकरण, रवि परांजपे आदि के कार्यों को प्रस्तुत किया गया था।

बाल मंडप में प्रतिदिन संवाद, चर्चा, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि के आयोजन होते रहे। कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार रहे : लेखिका संघ के सहयोग से रा. पु. न्यास द्वारा 'बच्चे क्या पढ़ना चाहते हैं' विषय पर संवाद में भागीदार थीं डॉ. मधु पंत, विभा देवसरे आदि। 'प्रथम बुक्स' ने एक विस्मृत कथावाचन परंपरा, दास्तांगोई को बाल मंडप में जीवंत किया। फौजिया और पूनम गिरधानी इस शैली में कथावाचन कर दर्शकों को कई सौ साल पीछे ले गईं। क्षमा कौल ने बच्चों के साथ बातचीत की तथा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से उनकी जानकारी बढ़ाने का प्रयास किया। एसिटेज के सहयोग से न्यास द्वारा 'बाल साहित्य व युवाओं के लिए थिएटर' विषय पर पैनल चर्चा में प्रयाग शुक्ल ने अध्यक्षता की। अतिथि वक्ता अमेरिका के किम पीटर (एसिटेज-अध्यक्ष) थे, पारो आनंद भी बोलीं। 'लेट्स गो अहेड' विषयक कार्यशाला का संचालन राजीव तांबे ने किया। कार्यक्रम में बच्चों की बौद्धिक क्षमता को परखने के लिए विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्धक खेल आयोजित किए गए। बचपन सोसायटी और न्यास के संयुक्त आयोजन में भारतीय बाल साहित्य के लोकप्रिय चरित्र बाल मंडप में जीवंत हो गए।

लेखिका शारदा कोलिलुरू की पुस्तक 'वन डे इन काजीरंगा' का लोकार्पण न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन द्वारा किया गया। सेतुमाधवन ने कहा, ''यह पुस्तक हमें संदेश देती है कि प्रकृति तथा प्राणियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।'' न्यास और प्रथम बुक्स की प्रस्तुति में 'जीवा आंटी' के नाम से मशहूर जीवा रघुनाथ ने बच्चों को कहानियाँ सुनाईं।

नवरत्न फाउंडेशन के सहयोग से न्यास द्वारा आयोजित रंगारंग नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने आकर्षक पोशाकों में भारतीय लोक परंपरा के अभिनव रंग बिखेरे। दिल्ली के एक स्कूल के बच्चों ने 'लड़की को क्यों पढ़ाना चाहिए' विषय पर एक प्रहसन प्रस्तुत किया। सावन कृपाल रूहानी मिशन के बच्चों ने 'बनो इनसान' विषय पर नाटक प्रस्तुत किया। चिल्ड्रन क्रिएटिव क्लब, हरियाणा ने 'रेड राइडिंग हुड' विषय पर कठपुतली कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा 'कथा' (स्वयंसेवी संगठन) के बच्चों द्वारा 'पुस्तकों के महत्व' विषय पर नाटक प्रस्तुत किया गया। बचपन सोसायटी के सहयोग से न्यास द्वारा 'बाल साहित्य एवं शिक्षा' विषय पर आयोजित पैनल चर्चा में डॉ. मधु पंत, सुरेखा पाणंदीकर, शशि जैन आदि वक्ता थीं। कथा प्रकाशन की पुस्तक 'रन रंगा रन!' का लोकार्पण न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन द्वारा किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से न्यास द्वारा युवाओं के लिए परामर्श सत्र का भी आयोजन किया गया। संचालन अदिति सरकार ने किया।

बाल मंडप में प्रथम राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता हरीचंद्रन मेहरा तथा वर्ष 2013 की राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता 9 वर्षीय बच्ची, माहिका गुप्ता से भी उपस्थित दर्शकों को बातचीत का मौका मिला। युवा लेखक रवींद्र सिंह ने 'कागज के थैलों के उपयोग' पर बातचीत की।

एसीटेज के सहयोग से 'युवाओं के लिए थिएटर' विषय पर न्यास द्वारा आयोजित कार्यशाला में विभिन्न विद्यालयों से आए बच्चों तथा स्वयंसेवी संगठनों ने भाग लिया। 'भारतीय बाल साहित्य तथा डॉ. पुलक विश्वास' पर चर्चा के अवसर पर चित्रकार आबिद सुरती बच्चों के बीच उपस्थित थे।

17 फरवरी को बाल मंडप में मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू ने 'द गुड बुक्स गाइड' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि बच्चे अन्य देशों के साहित्य के बारे में भी जानकारी प्राप्त करें तथा अधिक-से-अधिक पुस्तकें पढ़ें और अँग्रेजी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा को भी महत्व दें।" न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन ने कहा, "पुस्तकें अनंत हैं, परंतु एक अच्छी पुस्तक का चयन कैसे किया जाए यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसलिए एनबीटी द्वारा इस चुनौती का सामना करने के लिए इस दिशा में पहला कदम बढ़ाया गया है जिससे आज के युवाओं एवं शिक्षकों को मार्गदर्शन प्राप्त होगा।"

बाल मंडप में संपूर्ण गतिविधियों का समन्वय न्यास के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा किया गया।

बाल मंडप की संकल्पना में शामिल न्यास के संपादक थे–मानस रंजन महापात्र, रूबिन डिक्रूज, दीप सैकिया एवं सहयोगी।

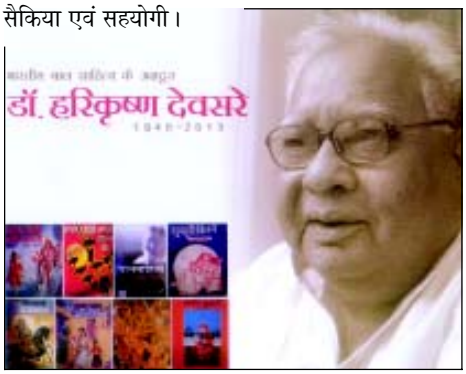

किड्स बबल : बच्चों की सृजनात्मक दुनिया

इस वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने बच्चों के लिए एक नवीन एवं रोमांचक कार्यक्रम 'किड्स बबल' की शुरुआत की। 16 फरवरी को आइटीपीओ प्रमुख रीटा मेनन द्वारा उद्घाटित इस विशिष्ट स्थान पर प्रतिदित बच्चों का रेला लगा रहता था। दरअसल, किड्स बबल की संकल्पना के पीछे बच्चों की सृजनधर्मिता को नया आयाम देने की इच्छा छिपी थी। एक विशेष मंडप में चार अलग-अलग कोने थे और एक केंद्रीय मंच था। इन कोनों के नाम थे– सृजनात्मक कोना, कला कोना, हस्तशिल्प कोना और मनोरंजन कोना। ये कोने न्यास, मकाओ बुक्स और एसएआरडी–'सार्ड' द्वारा संचालित थे। यहाँ बच्चे चित्र बनाते, कविता सुनाते, धागा पेंटिंग करते, मिट्टी से खिलौने बनाते, कोलाज बनाते। बच्चे गीत सुनाते और

भाषण भी देते। कथावाचन के दौर चलते, कठपुतलियों के करतब दिखाए जाते; मुखौटा निर्माण, पेपर मैशे और ओरिगैमी शिल्प सिखाए जाते। यानी बाल सृजनधर्मिता की अनोखी दुनिया था यह किड्स बबल।

इस मंडप में दिल्ली और एनसीआर के बच्चे तो आए ही जम्मू-कश्मीर से भी बच्चे आए। कश्मीरी बच्चों ने डोगरी, कश्मीरी और लद्दाखी नृत्य प्रस्तुत किए। केंद्रीय मंत्री फारूक अब्दुल्ला और क्रिकेट खिलाड़ी मुरली कार्तिक भी यहाँ आए। किड्स बबल का विशेष आकर्षण था बच्चों के प्रिय कार्टून पात्रों निन्जा-द हत्तौड़ी और डोरा-द एक्सप्लोरर का बच्चों के बीच आना और धमाल मचाना।

इस मंडप के प्रभारी, न्यास में सहायक निदेशक दीपांकर गुप्ता एवं सहयोग, सहायक सुनीता नरोत्रा का था।

पुस्तक मेला में इरफान खान

इस वर्ष विश्व पुस्तक मेले के प्रोन्नयन के लिए फिल्म अभिनेता इरफान खान ने रा.पु. न्यास का सहयोग किया। इस सिलसिले में वे प्रगति मैदान भी आए जहाँ हॉल नं. 7 के सामने लगे रेडियो 92.7 बिग एफएम के मंच पर पुस्तकप्रेमियों से रूबरू हुए। उन्होंने युवा लेखकों के लेखन की सराहना करते हुए कहा कि वे कमाल का काम कर रहे हैं। उन्होंने झुंपा लाहिड़ी को अपनी पसंदीदा लेखिका बताया। उन्होंने पुस्तक पर अपने उद्गार कुछ इस तरह व्यक्त की : मुझे किताबों से मोहब्बत है। किताबें आपको बहुत-सी दुनिया दिखाती हैं। दिल्लीवालों को किताबें पढ़ने की आदत डालनी चाहिए, क्योंकि जितना पढ़ने की आदत होगी उतना ही दूसरी दुनिया को जानने का अवसर मिलेगा।

जापानी नृत्यांगना **मैको** विश्व पुस्तक मेले में प्रगति मैदान में अपने नृत्य से सबका मन मोह लिया। मैको ने 22 एवं 23 फरवरी को दो परंपरागत जापानी नृत्य-प्रस्तुतियाँ दीं। तदुपरांत, दर्शकों से उन्होंने संवाद भी किए।

न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन की पुस्तक का लोकार्पण

21 फरवरी को हॉल नं. 8 के सभागार में रा.पु. न्यास के अध्यक्ष व सुप्रसिद्ध लेखक, श्री ए. सेतुमाधवन के कहानी संग्रह 'ड्यूरिंग द जर्नी एंड अदर स्टोरीज' का लोकार्पण बिहार के मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार, श्री पवन के. वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर पीजी कॉलेज ऑफ कम्यूनिकेशन एंड मैनेजमेंट, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली के प्रधानाचार्य, ओमचेरी एन.एन. पिल्लै भी उपस्थित थे। लोकार्पित पुस्तक 15 विशिष्ट कहानियों का एक संग्रह है।

पुस्तकें सभ्यता का विकास करती हैं। बिना पुस्तकों के किसी भी सभ्यता को विकसित करना संभव नहीं है। कोई भी तकनीक पुस्तकों के सौंदर्य का स्थान नहीं ले सकती। –डॉ. कर्ण सिंह, सांसद एवं अध्यक्ष–आइसीसीआर

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा और उसकी सहभागिता से कार्यक्रम

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा और उसकी सहभागिता से अनेक कार्यक्रमों के आयोजन हुए। कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार रहे : **लेखक से मिलिए** कार्यक्रम (15 फर.) में लेखकद्वय प्रकाश मनु एवं दिविक रमेश से श्रोताओं की मुलाकात हुई। प्रकाश मनु ने कहा कि पढ़ने की आदत ने ही उन्हें लेखक बनाया। दिविक रमेश ने कहा कि बच्चों और बड़ों के साहित्य विभाजन को वे सही नहीं मानते। लेखकद्वय ने कविताएँ भी सुनाईं। आलमी मीडिया के सह आयोजन में मुशायरे **शाम-ए-शायरी** (15 फर.) में कई नामचीन शायरों ने शिरकत की। नोमान शौक साहब ने फरमाया–*'सीधा मुआमला है मिरे और खुदा के बीच / दुनिया से कह दो आए न हरगिज हमारे बीच।'* साहित्य अकादेमी और रा.पु. न्यास के संयुक्त आयोजन **हिंदी रचना पाठ** (16 फर.) में अनेक रचनाकारों ने रचना/काव्य पाठ किए। वाणी प्रकाशन के साथ **एक शाम मुनव्वर राणा के नाम** (16 फर.) नामक कार्यक्रम में राणा ने अपनी पुस्तक 'मुहाजिरनामा' से चंद शायरी सुनाए। 'माँ' के अंश भी सुनाए। **लेखक से मिलिए** (16 फर.) में पुस्तकप्रेमियों को नासिरा शर्मा से मिलने का सुयोग मिला। इंद्रप्रस्थ प्रकाशन के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में प्रकाश मनु की पुस्तक **बाल साहित्य : नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ** का लोकार्पण किया गया (17 फर.)। वाणी प्रकाशन के साथ हुए कार्यक्रम में सुनीता बुद्धिराजा की पुस्तक **सात सुरों के बीच** का लोकार्पण किया गया (17 फर.)। लेखिका ने कहा, ''यह पुस्तक कलाकारों की बानगी को, उनकी अभिव्यक्ति को, उन्हीं की शैली और उन्हीं के शब्दों में रखने का प्रयास है।'' एक अन्य कार्यक्रम में पत्रकार वर्तिका नंदा ने रेडियो एंकर नीलेश मिश्रा से **बातचीत** की (17 फर.)। **लेखक से मिलिए** के अंतर्गत डॉ. नरेंद्र कोहली श्रोताओं से रूबरू हुए (17 फर.)।

18 फरवरी को इग्नू और न्यास के संयुक्त आयोजन में एक विचार-गोष्ठी **विविधता और संवाद : भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद** विषय पर आयोजित हुई। चार सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी में अनेक वक्ताओं ने अनुवाद पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। उद्घाटन सत्र में इग्नू के कुलपति एम. असलम ने इस आयोजन को 'वर्तमान साहित्य जगत का एक महत्वपूर्ण कदम' बताया। न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन ने कहा कि गत वर्ष अनुवाद पर आधारित गोष्ठी को अच्छा प्रतिभाव मिला अतः इस बार भी ऐसा आयोजन करना पड़ा। अशोक वाजपेयी ने 'अनुवाद' विषय को 'एक लंबी बहस का मुद्दा' बताया।

अन्य वक्ता थे–दिविक रमेश, के. सच्चिदानंदन, आर.के. देवस्वामी, प्रो. गणेश देवी, प्रो. एस्थर सीएम, वंदना टेटे, किम डो यंग (कोरिया) तथा डॉ. तोमोको किकुची (जापान)। सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन इग्नू में निदेशक, प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने किया। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर भी उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी के साथ इसी दिन (18 फर.) न्यास ने **इंडो-चेक राइटर्स मीट** का आयोजन किया। कुछ महत्वपूर्ण वक्ता थे–अकादेमी-सचिव के. श्रीनिवासराव, न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन, लेखक उदय प्रकाश, न्यास-निदेशक डॉ. सिकंदर आदि। **लेखक से मिलिए** (18 फर.) के अंतर्गत बाल स्वरूप राही व लक्ष्मी शंकर वाजपेयी से मुलाकात पुस्तकप्रेमियों के लिए यादगार रही।

रा.पु. न्यास से प्रकाशित डॉ. कृष्ण कुमार के कहानी संग्रह **और कथाएँ ऐसी भी** के लोकार्पण-अवसर (18 फर.) पर लेखन ने कहा, ''मैं समाज का रूप सामने लाने के लिए लिखता हूँ।'' कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ये थे–हरीश अरोड़ा, अनिल कुमार, दिविक रमेश तथा राकेश पांडे।

शाम-ए-सूफियाना (18 फर.) में सूफी गायक चांद निजामी बंधुओं का गायन हुआ। कार्यक्रम का सह आयोजन था–नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज।

19 फरवरी को केंद्रीय मंत्री, नवीन तथा नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय, डॉ. फारूक अब्दुल्ला ने न्यास द्वारा बच्चों और नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित **कश्मीरी भाषा की आठ पुस्तकों का लोकार्पण** किया। डॉ. अब्दुल्ला ने कहा कि कश्मीरी भाषा में कई नायाब पुस्तकें हैं जिनका संरक्षण जरूरी है। न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन ने कहा कि कश्मीरी भाषा में प्रकाशित की गई पुस्तकें केवल शुरुआत है। हम आगे इस पर और काम करेंगे। बारामुला के सांसद शरीफुद्दीन ने कहा कि कश्मीरी जुबान के लिए मिलजुलकर काम करना होगा। डॉ. ओ.एन. कौल ने कश्मीरी भाषा पर उचित ध्यान नहीं दिए जाने पर दुख जताया। कश्मीरी भाषा विशेषज्ञ समिति-सदस्य अजीज हजिनी ने कश्मीरी को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता की बात कही। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने कहा कि न्यास कश्मीरी भाषा के विकास के लिए सभी प्रकार के प्रयास कर रहा है। आठ लोकार्पित पुस्तकों में से कुछ के नाम हैं : *दीनू से दीनानाथ, पुस्तक मेरा मित्र, गाँव का बेटा* तथा *जुम्मन काका* आदि।

वाणी प्रकाशन के साथ आयोजित कार्यक्रम **हिंदी और हम : आधुनिकता व पुनः पाठ** (19 फर.) में अभय

कुमार दुबे संपादित पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर दुबे ने कहा कि दूसरे देशों में किताबें उनकी मातृभाषा में छपती हैं, लेकिन हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता है। टीवी एंकर रवीश कुमार ने हिंदी में पाठकों की संख्या कम होने की बात पर अपनी असहमति जताई। **लेखक से मिलिए** के अंतर्गत श्रोताओं को अशोक चक्रधर से मिलने, बतियाने का सुयोग मिला। साहित्य अकादेमी के साथ आयोजन का नाम था **बाल साहित्यकारों द्वारा पठन** (20 फर.)। इसमें रचनाकार थे–दर्शन सिंह आशट, अनूपा लाल, शांतनु तामुली, के ई. प्रियंवदा तथा के. शांतिबाला देवी। वाणी प्रकाशन के साथ आयोजित कार्यक्रम में उदय प्रकाश के उपन्यास **वारेन हेस्टिंग्स का साँड़** पर विमर्श (20 फर.) के क्रम में वर्तिका नंदा ने लेखक से बातचीत की। उदय प्रकाश ने कहा, ''इस उपन्यास में इतिहास उतना ही मिलेगा, जितना दाल में नमक।''

21 फरवरी को साहित्य अकादेमी के साथ आयोजन में **युवा लेखकों द्वारा रचना पाठ** किया गया। 22 फरवरी को वाणी प्रकाशन के साथ आयोजित कार्यक्रम में मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास **'हम लोग' का लोकार्पण** किया गया। इस कार्यक्रम में पुरुषोत्तम अग्रवाल, पुष्पेश पंत, मृदुला गर्ग, प्रभात रंजन ने अपनी बातें रखीं। न्यास द्वारा **आज का ड्रामा** (22 फर.) विषय पर चर्चाकार थे–शाहिद अनवर, दानिश इकबाल, पूनम गिरधानी, फौजिया खान, जावेद दानिश। संचालन अनीस आजमी ने किया।

16 से 23 फरवरी तक, प्रतिदिन **समन्वय : आइएचसी भारतीय भाषा महोत्सव** नाम से, रा.पु. न्यास एवं इंडिया हैबिटाट सेंटर द्वारा अलग-अलग विषयों पर कार्यक्रम के आयोजन किए गए। कुछ कार्यक्रमों के नाम हैं : साहित्य में आम आदमी, शहर में बोली, दिल्ली थिएटर में फोक एवं लोक, कैंपस में साहित्य, युवा पीढ़ी का जिज्ञासु प्रकरण आदि। रचना पाठ का भी आयोजन हुआ।

राजकमल द्वारा प्रकाशित **तिनका-तिनका तिहाड़** के लोकार्पण-अवसर (19 फर.) पर न्यास-निदेशक डॉ. एम. ए. सिकंदर ने भी अपने संबोधन किए।

अगर हम अपनी जुबान पढ़ सकें, बोल सकें तथा लिख सकें, तभी हमारी पहचान बनेगी। हमें हर जुबान से प्यार होना चाहिए। यदि हम हर जुबान को प्यार नहीं करेंगे तो हिंदुस्तान को एक नहीं कर सकेंगे। हमारी भाषा ही हमारी पहचान है, हमें इसे मजबूती से थामकर रखना चाहिए।
–डॉ. फारूक अब्दुल्ला, केंद्रीय मंत्री

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच

17 फरवरी को प्रगति मैदान में दो दिवसीय नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच (नई दिल्ली राइट्स टेबल) की शुरुआत की गई जो भारत तथा विदेशों से आए प्रकाशकों, प्रतिलिप्यधिकार एजेंटों, अनुवादकों व संपादकों को व्यापार अवसरों का परस्पर लाभ उठाने हेतु एक मंच प्रदान करता है। नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच ने एक नवीन व्यावसायिक परिवेश में प्रकाशकों के बीच व्यापारिक सत्र आयोजित कर उन्हें अपने अनुभव साझा करने का अवसर प्रदान किया। साथ ही, इस अद्वितीय प्रारूप ने प्रतिभागियों को अपने प्रतिलिप्यधिकार मंच को सुरक्षित करने, परस्पर भेंट करने, अपने उत्पाद एवं विचार प्रस्तुत करने व अँग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध पुस्तकों के अनुवाद एवं अधिकारों के हस्तांतरण हेतु अपनी अभिरुचियों तथा समझौतों को प्रायोगिक तौर पर अंतिम रूप प्रदान करने के भी अवसर प्रदान किए।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष एडब्ल्यूआइसी, नीलिमा सिन्हा; प्रसिद्ध लेखिका, डॉ. इरा सक्सेना; एनबीटी की पूर्व निदेशक, वर्षा दास तथा एनसीइआरटी की डॉ. उषा दत्ता ने भाग लिया।

मेला समाचार बुलेटिन : विश्व पुस्तक मेला की अवधि में प्रगति मैदान में प्रतिदिन बड़े पैमाने पर अनेकानेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के 'कवरेज' के लिए प्रतिदिन हिंदी एवं अँग्रेजी में अलग-अलग मेला समाचार बुलेटिन के प्रकाशन किए गए। ये बुलेटिन थे–**मेला वार्ता** एवं **शो डेली**। न्यास की ओर से इन बुलेटिनों के संपादकीय टीम में शामिल थे–पंकज चतुर्वेदी तथा दीपक कुमार गुप्ता (मेला वार्ता) एवं बिन्नी कूरियन तथा कंचन वांचू शर्मा (शो डेली)। मीडिया प्रभारी थीं–उमा बंसल।

पुस्तक मेले में पहली बार

ई-टिकटिंग की सुविधा : आइटीपीओ के कॉरपोरेट वेबसाइट पर कोई भी व्यक्ति पुस्तक मेला हेतु ई-टिकट ऑनलाइन खरीद सकता था। **मेट्रो स्टेशनों से टिकट विक्रय :** पुस्तकप्रेमियों की सुविधा हेतु सभी प्रमुख मेट्रो स्टेशनों से तथा कश्मीरी गेट तथा विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशनों पर स्थित एनबीटी विक्रय पटल से प्रवेश टिकट की बिक्री की गई। **सचल पुस्तक वाहन की स्थापना :** पुस्तक मेला परिसर में रा.पु. न्यास द्वारा 10 पुस्तक परिक्रमा वाहन खड़े किए गए, ताकि न्यास द्वारा तीन विभिन्न हॉलों में स्थापित स्टॉलों पर भीड़ की स्थिति में पुस्तकप्रेमियों को कोई असुविधा न हो। **प्रगति मैदान में रेडियो लाइव :** रेडियो 92.7 बिग एफ.एम. के द्वारा पुस्तक मेला से संबंधित नवीनतम जानकारियाँ दी गईं, विशिष्ट अतिथियों से इंटरव्यू, पुस्तकप्रेमियों से लाइव बातचीत आदि प्रसारित किए गए।

सीइओ स्पीक

रा.पु. न्यास द्वारा फिक्की के सहयोग से 'सीइओ स्पीक ओवर चेयरमैंस ब्रेकफास्ट' कार्यक्रम का 16 फरवरी को आयोजन किया गया। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के एक भाग के रूप में इस कार्यक्रम की शुरुआत पिछले वर्ष की गई। इसका उद्देश्य भारत में प्रकाशन समुदाय के साथ अधिक-से-अधिक संपर्क स्थापित कर व्यवसाय तथा पुस्तक व्यापार संबंधी विषय पर चर्चा साझा करने हेतु मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीइओ) को एक मंच प्रदान करना है। इस अवसर पर प्रकाशन उद्योग से लगभग सौ से अधिक मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रबंध निदेशक, निदेशक तथा वरिष्ठ कार्यकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर योजना आयोग, भारत सरकार, सदस्य डॉ. नरेंद्र जाधव द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा, बिएता स्तासिंस्का द्वारा विशिष्ट अतिथि देश प्रस्तुतीकरण तथा एएफसीसी, सिंगापुर 2014 में भारत के फोकस देश होने पर नेशनल बुक डेवलपमेंट काउंसिल ऑफ सिंगापुर के कार्यकारी निदेशक एशियन फेस्टिवल ऑफ चिल्ड्रंस कंटेंट सिंगापुर के कार्यकारी सचिव, आर. रामचंद्रन का प्रस्तुतीकरण विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

लेखक मंच एवं साहित्य मंच

वर्ष 2013 की तरह राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा इस वर्ष भी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में लेखक मंच का सफल आयोजन किया गया। यहाँ पुस्तकप्रेमियों ने प्रख्यात लेखकों तथा अन्य साहित्यिक हस्तियों के साथ संवाद किए तथा इस मंच पर विभिन्न पठन-सत्र एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों के आयोजन हुए। लेखक मंच मुख्य रूप से हिंदी भाषा से संबंधित आयोजनों के लिए था। लेखक मंच की स्थापना हॉल नं. 18 में की गई थी। यह हॉल हिंदी भाषा के प्रकाशकों के लिए था। लेखक मंच के कुछ गतिविधियों की चर्चा पृष्ठ 6 पर की गई है तथा कुछ अन्य गतिविधियों के संबंध में अगले अंक में जानकारी दी जाएगी। लेखक मंच का समन्वय न्यास में हिंदी भाषा संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने किया।

इसी प्रकार, हॉल नं. 8 में साहित्य मंच का निर्माण किया गया था। यहाँ भी प्रतिदिन अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन हुए। इस मंच के प्रभारी थे न्यास में गुजराती भाषा संपादक भाग्येंद्र पटेल। मंच के कुछ अन्य कार्यक्रमों का विवरण अगले अंक में।

रा.पु. न्यास के अध्यक्ष एवं निदेशक को सम्मान

19 फरवरी को पुस्तक मेले में एफ्रो-एशियाई पुस्तक परिषद द्वारा **एफ्रो-एशियाई क्षेत्र में मुद्रित पुस्तकें व आगामी ई-पुस्तकें** विषय पर एक विचार-गोष्ठी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व निर्वाचन आयुक्त, जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति थे। संचालन डॉ. ओ. ब्रायन ने की। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा एफ्रो-एशियाई क्षेत्र में पुस्तक प्रोन्नयन गतिविधियों के आयोजन के लिए परिषद द्वारा रा.पु. न्यास के अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन, रा.पु. न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर तथा सिंगापुर के डॉ. रामचंद्रन को सम्मानित किया गया।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला : एक नजर में

- मेला स्थल : प्रगति मैदान, नई दिल्ली
- क्षेत्रफल : 33,000 वर्ग मीटर
- हॉल सं. : 1 आर, 7ए से एफ, 8 से 11, 12, 12ए, 14 तथा 18
- प्रदर्शकों की संख्या : लगभग 1100 (भारतीय एवं विदेशी)
- स्टॉल/स्टैंड की संख्या : 1760/210
- भागीदार देश/अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ : 11

भारत जैसे विशाल देश में एक बड़े स्तर पर पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है और पुस्तकें हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।–सुश्री चंद्रेश कुमारी कटोच, केंद्रीय मंत्री

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/3/2014

लाल चौक : सांस्कृतिक संध्या का साक्षी

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला केवल पुस्तकों का ही नहीं, संस्कृति का भी मेला होता है। पुस्तक विक्रय और विमर्श के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी चलते रहते हैं। इस बार भी प्रगति मैदान का लाल चौक सांस्कृतिक हलचलों का साक्षी रहा। यहाँ हर शाम गीत, ग़ज़ल, नृत्य, वादन और गायन के दौर चले। नौ दिनों तक मानो यह क्षेत्र एक 'लघु भारत' बना रहा। 'देशज' नाम से 15 से 18 फरवरी तक यहाँ प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुतियों के क्रम में ओड़िशा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल, मणिपुर, झारखंड, बिहार, हरियाणा, नगालैंड, प. बंगाल, केरल, सिक्किम, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों से गीत, संगीत एवं नृत्य की प्रस्तुतियाँ हुईं। 19 से 23 फरवरी तक लाल चौक पर ही न्यास के सहयोग से साहित्य कला परिषद द्वारा पाँच दिवसीय गीत-संगीत एवं नृत्य महोत्सव चला। इस क्रम में महेंदर पाल का ग़ज़ल-गायन हुआ और अशोक भंडारी के जादू के करतब भी।

16 फरवरी को प्रगति मैदान के हंसध्वनि थिएटर में प्रख्यात लोक गायिका मालिनी अवस्थी के 'सोनचिरैया' पर आधारित लोकगीतों ने संगीतप्रेमियों का मन मोह लिया। बीच-बीच में लोकनर्तकों द्वारा लोकगीत एवं नृत्यों की प्रस्तुतियाँ भी होती रहीं।

न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन के उद्गार

पुस्तक मेला में आम लोगों का इतनी बड़ी संख्या में भागीदारी ने यह आश्वस्त किया कि भारत का समाज पुस्तकों के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है। ...एशिया में कोई भी ऐसा पुस्तक मेला नहीं है जहाँ इतनी बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी आते हों। ...इस बार के पुस्तक मेला के माध्यम से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने एक नए दौर में प्रवेश किया (न्यास की पहली ई-पुस्तक का लोकार्पण)। ...न्यास मुद्रित और ई-बुक्स, दोनों को समान महत्व देता रहेगा।

न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर का आभार

एशिया के सबसे विशाल साहित्यिक-सांस्कृतिक-व्यावसायिक उत्सव की सफलता के लिए पुस्तक मेला से जुड़े हर व्यक्ति और संस्था के प्रति आभार। ...राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के पुस्तक मेला में पधारने से इसे नया आयाम मिला।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070